हिन्दी विभाग

BA III VI Paper डॉ गीता कुमारी

22.10.2020

11.45 to 1.20 pm

विषय: काव्यशास्त्र

रस:

काव्य की आत्मा - काव्य को पढ़ने या सुनते समय हमें जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे ही रस कहा जाता है। काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा जाता है है पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित स्थायी भाव ही रस रूप में परिणत होकर उसे आनन्द प्रदान करता है।

रस को काव्य की आत्मा या प्राणतत्व माना गया है। रसहीन काव्य निर्जीव है, अतः रस के बिना काव्य का अस्तित्व ही नहीं है। जैसे प्राण के अभाव में शरीर व्यर्थ है, उसी प्रकार रस के अभाव में कोई रचना काव्यत्व से ही रहीत हो जाती है।

रस की विशेषताएँ

1. रस आस्वाद रूप है, आस्वाद्य नहीं
2. रस की उत्पत्ति सतोगुण के उद्रेक से होती है,
3. रस ब्रह्मानन्द सहोदर है,

4. रसानुभूति अलौकिक होती है

10:00
5 रस चिन्मय अर्थात् ज्ञान स्वरूप है

11:00
6. रस स्वप्रकाशानन्द है,

7. रस अखण्ड है

12:00
8. रस की अनुभूति तन्मयता की स्थिति में होती है,

13:00
9. रस लोकोत्तर चमत्कार है।

14:00
रस का स्वरूप

1. सहृदय सामाजिक के हृदय के वासना रूप से
15:00
विद्यमान रति, आदि स्थायी भाव आलम्बन द्वारा
16:00
उद्बुद्ध होकर 'उद्दीपन' विभाव से उद्दीप्त होते हैं।
'अनुभाव' उन्हें प्रतीति योग्य बनाते हैं और संचारी
17:00
भाव पुष्ट करते हैं। इस प्रकार विभावादि के संयोग से
18:00
ये रति आदि स्थायी भाव ही शृंगार आदि रसों
के रूप में परिणत हो जाते हैं।

One should always play fairly when one has the winning cards.

Notes

Scanned with CamScanner

2. रस की निष्पत्ति सामाजिक के हृदय में तभी सम्भव हो पाती है जब उसके हृदय में 'रजोगुण' एवं तमोगुण का शमन होकर सतोगुण व उद्रेक होता है। इस अवस्था में उसका हृदय राग द्वेष से मुक्त होकर लोक सामान्य भावभूमि पर प्रतिष्ठित हो जाता है।

3. रसानुभूति के समय विभावादि अपना स्वतंत्र अस्तित्व त्यागकर स्थायीभाव में लय हो जाते हैं। अतः सहृदय को उनके पृथक-पृथक अस्तित्व का बोध न होकर समन्वित अनुभूति होती है इसी को रस की अखण्डता कहते हैं।

4. रस को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा गया है। जिस प्रकार समाधि की दशा में योगी को ब्रह्मानन्द की अनुभूति होती है और उस ब्रह्मानन्द में अन्य विषय उसे स्पर्श नहीं कर पाते उसी प्रकार रसास्वादन काल में सहृदय सामाजिक को भी अन्य विषय स्पर्श नहीं करते। ब्रह्मानन्द लौकिक विषयों से

Scanned with CamScanner

पूर्णत: असम्पृक्त होता है तथा स्थायी होता है, जबकि रस का आनन्द लौकिक विषयों से पूर्णत: असम्पृक्त नहीं होता तथा चिरस्थायी भी नहीं होता, इसी कारण रस को ब्रह्मानन्द न मानकर ब्रह्मानन्द सहोदर माना जाता है।

रति आदि संस्कार वासना रूप से सहृदय के हृदय में विद्यमान रहते हैं जिन्हे काव्य शास्त्र में

5 रस वेद्यान्तर सम्पर्क शून्य है अर्थात रसास्वाद काल में सामाजिक पूर्णत: तन्मय रहता है अर्थात रसास्वाद काल में सामाजिक पूर्णत: तन्मय रहता है रसानुभूति की स्थिति में उसे अन्य वेद्यविषयों का ज्ञान ही नहीं रहता वह राग-द्वेष एवं देशकाल की सीमाओं से मुक्त होकर पूर्णत: आलोकित हो जाता है।

A liar will not be belived,
even when he speaks the truth.

Scanned with CamScanner

6. रस स्वप्रकाशानन्द तथा चिन्मय है। रसानुभूति आत्म चैतन्य से प्रकाशित आनन्दमयी चेतना है, अर्थात् वह एक प्रकार की ऐसी आनन्दमयी चेतना है जिसमें ऐन्द्रियानुभूति का अभाव तथा चैतन्य का सद्भाव रहता है।

7. रस न सविकल्पक ज्ञान है, न निर्विकल्पक ज्ञान, अतः अलौकिक है। जब पदार्थ के स्वरूप के साथ नाम, जाति आदि का बोध रहता है तब यह शब्द व्यवहार का विषय रहता है, किन्तु रसानुभूति शब्द व्यवहार का विषय नहीं होती इसलिए उसे सविकल्पक ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

8. रस न प्रत्यक्ष है और न परोक्ष, अतः अलौकिक है। रस का साक्षात्कार होता है, अतः उसे परोक्ष नहीं कहा जा सकता। वह प्रत्यक्ष भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि काव्य में शब्दादि से वह उत्पन्न होता है।

Scanned with CamScanner